



नई दिल्ली  
अंक - 150

[www.saikalpadhyatmsanstha.com](http://www.saikalpadhyatmsanstha.com)

श्री साई शक : 35-36  
अक्टूबर - 2016

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥  
॥ ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः॥

### विजया दशमी

#### गुरुबंधुभगिनियों से

जगत में आज मनुष्य जो जीवन व्यतीत कर रहा है उसके जीवन का क्या हेतू है – ऐसा सवाल यदि उससे पूछे तो इसका जवाब दे पाना उसके लिए संभव नहीं होता। इसका कारण उसके बारे में सोचने का मौका उसके जीवन में नहीं आया होता है। अपनी बुद्धिमतानुसार शिक्षण और नौकरी मिलने पर, उस प्रापंचिक जीवन में अधिकाधिक सुखों का लाभ किस प्रकार से होगा इसी कोशिश में आज मनुष्य रहकर, उससे अधिक वह अपने जीवन के बारे में नहीं सोचता। कालांतर के पश्चात हम जिसे सुख समझते थे वह सुख है ही नहीं इसका पता चलने पर वह और कुछ प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। या यदि अधिक प्रयत्न नहीं कर पा रहा हो या किए गए प्रयत्नों को यश ना मिलने पर जीवन में निराशा उत्पन्न होती है। और मनुष्य के अंदर की हिम्मत और महत्वाकांक्षा कम होने लगती है। फिर आगे जैसे तैसे जीवन को चलाना और आए हुए दिन को, ऐसा उसके नसीब में है ये भावना रखना जिससे परिवार के अन्य सदस्यों के हिस्से में संताप, चिड़चिड़ापन आता है। सारे सुख हैं फिर भी परिवार में समाधान नहीं, ऐसी परिस्थिति का अनुभव होता है। और उसका जवाब या उस परिस्थिति का हल नहीं मिल पाता। अपने सारे प्रयत्न खत्म होने पर फिर किसी का मार्गदर्शन, एक दूसरे के साथ चर्चा, ज्योतिषि से पूछ कर या स्वयं के विचारों से दैविक मार्ग का अवलंब किया जाता है। परन्तु यह देवतार्जन अब कोई इलाज नहीं है सोचकर अपनाया हुआ होता है। यदि उसका फल योग्य आता है तो ईश्वर पर विश्वास न आने पर अविश्वास ऐसी विचार धारा जीवन में होने लगती है। जिस उमंग के साथ बढ़िया शिक्षण लिया, उत्तम नौकरी मिली, बढ़िया घर बनाया, पत्नी, बच्चे मिले परन्तु उस प्रपंच के आनंद का उपभोग लेने की क्रिया खत्म होकर मनुष्य अशांति का जीवन व्यतीत करता है।

यदि इस संपूर्ण परिस्थिति का विचार करना हो तो इसमें से मार्ग

✳️  
**Publisher**  
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha  
“Sai Niketan”  
New Delhi - 110025  
Ph. : 26956561  
E.mail : saikalp@gmail.com  
dadab6@gmail.com

✳️  
**Patron**  
Anand Bapshet

✳️  
**Editorial**  
Vijay Kumar Varma  
Jogesh Grover

✳️  
**Subscription**  
Inland  
Yearly : Rs.250.00  
Life time : Rs.1000.00

✳️  
**Overseas**  
Yearly : US\$ 250.00  
Life time : US\$ 500.00

✳️  
**Printed By**  
Soni Printers  
Cell : 09718657567

✳️  
**Published Every Month**  
©All rights reserved with  
Publisher

निकालने की कोशिश में इसे ध्यान में लेना चाहिए कि हमने जिस संपत्ति और सुख को इस जग में खोजा पर हमारे पास जो साधन संपत्ति है, हमारे इन्द्रिय अवयव, बुद्धि, वाचा और मन जो कि निसर्ग या ईश्वर ने दी हुई बहुत बड़ी देन है, इन देहिक माध्यमों की ओर क्या कभी हमने अभ्यास दृष्टि से देखा है? यदि उसमें कोई बिगाड़ होता है तो ही हमारा ध्यान उनकी ओर जाता है। परन्तु बीमारी या व्याधी निर्माण होने से पहले शरीर का चलन-पलन जोकि सुचारु रूप से चलता रहता है तब हमारा ध्यान उसकी ओर नहीं जाता। आज जगत में जो आविष्कार किए गए उनकी मुख्य जड़ मानवीय देह में होती है। हम जिन उपकरणों को दुनिया में देखते हैं वही कार्य मानवीय देह में भी होता रहता है। जो उपकरण हैं उन्हें कार्य करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है और उसकी तरतूद वहाँ पर की होती है। उसी प्रकार से शरीर में शांति और समाधान निर्माण करने के लिए जो इन्द्रियाँ हैं क्या हम उन्हें उनकी आवश्यकता अनुसार ऊर्जा देते हैं इसके बारे में सोचना चाहिए। शरीर के प्रत्येक अवयव का कार्य भिन्न भिन्न है। देखने के लिए आँखें, सुनने के लिए कान, सूँघने के लिए नाक, बोलने के लिए मुँह, रूचि के लिए जबान इत्यादि। ये सारे अवयव उनके गुणधर्म के अनुसार कार्य करते रहते हैं। आँखें सूँघ नहीं सकती या कान देख नहीं सकते। उसी प्रकार से देहिक माध्यम में समाधान व्यक्त करने वाला जो माध्यम है क्या हमने उसका लाभ लिया है? प्रत्येक इन्द्रिय को कार्यक्षम रखने की आदत बचपन से लगाए तो उसका लाभ हम उत्तम रिति से ले सकते हैं।

मानवी देह में बुद्धि यह एक विशेष माध्यम है। जिसमें सारा ज्ञान, घटनाएँ जमा होती रहती हैं। और हम आवश्यकता अनुसार उन्हें विचारों द्वारा व्यक्त कर सकते हैं। यह विचार व्यक्त करने का माध्यम यानी “स्थूल मन” है। इसी माध्यम से हम जीवन जीते हैं। “मैं बीमार हुआ”, “मुझे दुख हुआ”, “मैंने पदवी प्राप्त की”, “मुझे नौकरी मिली”, “मैं परदेस गया” इस प्रकार के जो उद्गार निकाले जाते हैं वे इस स्थूल मन के माध्यम द्वारा ही जब एक के लिए एक इस प्रकार से यश मिलता जाता है तब देहिक माध्यम एवं मानवीय जीवन के बारे में सोचने का मौका नहीं मिलता। परन्तु यदि अपयश आया और वह एक के पीछे एक आने पर व्यक्ति उकता जाता है, घबरा जाता है। मेरे नसीब में क्या है और दूसरों को यश प्राप्त होता है फिर मुझे क्यों नहीं? अपनी सहनशक्ति और आत्मविश्वास कम हुआ है ऐसा अनुभव होता है। अपने सवालों का वो जवाब खोजने लगता है परन्तु स्पष्टीकरण नहीं मिलता। बच्चे बड़े हो चुके होते हैं उन्हें उत्तम शिक्षण और आहार देने पर अपनी जिम्मेदारी खत्म हो गई ऐसा लगने से योग्य संस्कार के अभाव में बच्चे हमारी बातें नहीं सुनते। पति-पत्नी के बीच के संबंध तनाव युक्त होते हैं परिस्थिति हाथों से बाहर निकल जाने से और मार्ग ना मिलने से मनुष्य व्यसनाधीन होता है फिर जीवन जीना यह एक संकट बनकर रह जाता है।

आज ऐसी यह परिस्थिति निर्माण होने का कारण यानी देह के महत्वपूर्ण माध्यम की ओर मनुष्य का दुर्लक्ष होता है वह यानी “सूक्ष्म मन” है।

“सूक्ष्म मन” यह मनकी दूसरी महत्वपूर्ण अवस्था होकर जिस अवस्था का लाभ हमने आज तक नहीं लिया या उस अवस्था को विकसित नहीं किया यानी उस अवस्था का अनुभव नहीं लिया। परिवार में रहने वाले सारे घटक इसी वर्ग के होने से इस उपरोक्त वर्णित परिस्थिति का अनुभव प्राप्त होता है। मामूली कारण की वजह से मतभेद होते हैं, वाद विवाद होते हैं। जीवन में शांति का वास होने के लिए दैनंदिन व्यवहार समाधान पूर्वक करने के लिए शरीर को शक्ति की आवश्यकता होती है। देहिक चलन चलन होने के लिए जिस शक्ति की आवश्यकता होती है उसका लाभ हम नित्य आहार द्वारा लेते रहते हैं। परन्तु शांति, समाधान और आनंद इनका अनुभव स्वयं को एवं दूसरों को प्राप्त होने के लिए शरीर में आत्मिक शक्ति की आवश्यकता होती है। आत्मिक शक्ति में ये गुणधर्म होते हैं। सूक्ष्ममन का मतलब हम छोटे बालक के चेहरे को देखकर समझ सकते हैं। जब तक उनके स्थूल देह की और बुद्धि की वृद्धि नहीं होती तब तक हर छोटा बालक सूक्ष्म मन द्वारा जीवन व्यतीत करता है। उसके चेहरे पर निरालस हास्य और प्रसन्नता दिखाई देती है। परन्तु धीरे धीरे बुद्धि का बढ़ना यानी पर्याय से स्थूल मन का विकास प्रारंभ होने पर उसके अनुसार विकारों की धारणा बच्चों में होती है इसलिए बच्चों को बढ़ा

करते वक्त माता पिता की सर्वाधिक जिम्मेदारी होती है। हमारे आचार विचारों से उन बच्चों पर उत्तम संस्कार होते हैं तो सूक्ष्म मन अधिक विकसित होता जाता है। और उनका बचपन से ही होना आवश्यक होता है। इसका मतलब स्थूल मन से भी अधिक सूक्ष्म मन प्रभावी होना चाहिए तभी उस बच्चे में समझदारी, शांत प्रवृत्ति और जिम्मेदारी का एहसास दिखाई देता है।

सूक्ष्म मन का विकास किस प्रकार से करें यह समझने पर आज जीवन में जिस कमी का एहसास होता है वह नहीं रहती। क्योंकि आत्मिक शक्ति का उगम सूक्ष्म मन में होता है। आहार द्वारा जो भी देहिक शक्ति मनुष्य प्राप्त करता है। उसमें जो भी कमी रह जाती है। उस कमी को यह आत्मिक शक्ति भर देती है। परन्तु आत्मिक शक्ति की कमी को देहिक शक्ति भर नहीं सकती। जिस प्रकार से आहार लेने के लिए हम दिनभर में वक्त निकालते हैं, उसी प्रकार से आत्मिक शक्ति की निर्मिती नियमित रूप से करने की आदत भी हमें डालनी चाहिए। जिससे हमेशा उत्साह बना रहता है। थकान या कमजोरी महसूस नहीं होती और जीवन में संतुलन बना रहता है।

आज हम बुद्धि एवं स्थूल मन इनके द्वारा जीवन व्यतीत करते हैं। उसके कारण देह परिसर में घटित होने वाली घटनाओं का प्रतिसाद शरीर पर दिखाई देता है। और उनकी प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है और यदि व्यक्त न कर पाएँ तो मनस्ताप होता है। संताप, क्रोध, अस्थिरता व्यक्त होती है पर इससे उल्टा यदि बुद्धि और सूक्ष्म मन इनके द्वारा जीवन जीने की आदत होने पर अलग तरह के जीवन का अनुभव मिलता है। प्रत्येक घटना का प्रतिसाद मिलने पर भी बिना सोचे प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं होती। जीवन के लिए पोषक ऐसा आचरण होने लगता है। आँखे देखने का कार्य करती हैं। कान सुनने का कार्य करते हैं। और वाणी बोलने का कार्य करती हैं। पर यदि हम सूक्ष्म मनसे जीवन जीने की आदत डालते हैं तो क्या देखना योग्य है, क्या देखना योग्य नहीं है। क्या सुनना योग्य है, क्या सुनाना योग्य नहीं। क्या बोलना योग्य है, क्या बोलना योग्य नहीं ऐसे विवेक का अनुभव मिलता है और ऐसे व्यवहार से आनंदित वातावरण की निर्मिती होती है और वह बढ़ती जाती है। और ऐसे मनुष्य का सहवास सभी पसंद करते हैं। क्योंकि उसके सानिध्य में आने वाले सभी व्यक्तियों पर इस आनंदमय वातावरण की बरसात होती है।

यदि बचपन से ही संस्कारों द्वारा सूक्ष्म मनका विकास न करें तो भी जब तक जीवन सुचारु रूप से चलता रहता है तब तक उसके बारे में सोचने की जरूरत महसूस नहीं होती। परन्तु जब जीवन में कोई एक आद्य समस्या या रूकावट निर्माण होती है और जब अपने प्रयत्नों द्वारा उसका निवारण नहीं हो सकता, उस वक्त मनुष्य अपने जीवन में ऐसा क्यों घटित हुआ इसके बारे में सोचने लगता है। ऐसे वक्त उसे योग्य मार्गदर्शन प्राप्त होकर यह समस्या किस वजह से है? वह क्यों उत्पन्न हुई? और उसका निवारण करने के लिए क्या करना होगा? इसका स्पष्टीकरण मिलना आवश्यक है। वह मार्गदर्शन काम चलाऊ या उस वक्त को टालने के लिए नहीं होना चाहिए वह केवल समस्या को दूर करने के लिए नहीं होना चाहिए। वह समस्या निर्माण होने के लिए जो देहिक माध्यम की कमी कारणभूत हुई उसका निवारण करने के लिए मार्गदर्शन होना चाहिए। अँलर्जी के कारण सर्दी, खाँसी हो रही हो और सालों तक हम यदि अँलर्जी पर दवाईयाँ ले रहे हों तो वह सही उपाय नहीं है। तो शरीर को जो अँलर्जी है उसका नष्ट होना आवश्यक है और इलाज भी उसी तरह का होना चाहिए।

सूक्ष्म मन के विकास का प्रमुख अंग याने "मानना" (विश्वास रखना) है। विश्व को गतिमान रखने वाली और अलग-अलग ऋतुओं के अनुसार उसके कार्य को समतोल रखने वाली विश्व की सारी शक्तियों को पूज्य मान कर उनकी आराधना करना ये पहले जमाने के लोग करते थे परन्तु आगे पाँचतत्त्वों द्वारा देवदेवताओं की निर्मिती की गई और उनकी भिन्न-भिन्न पूजा पद्धति अस्तित्व में आई। घराने के कुल देवता एवं उपास्य देवता निर्माण की गई पूजा पद्धति भिन्न-भिन्न होने पर भी उनके पीछे का मूल हेतू हमें संभालना और हमें जीवन देने वाले तत्त्वों को मानना यही था। क्योंकि इस प्रकार से न दिखने वाली (अदृश्य) परन्तु अनुभव प्रदान करने वाली शक्ति को "मानना" यह सूक्ष्म मन के विकास के लिए आवश्यक था और है। आज भी इन शक्तियों को ना मानने

से कोई भी कार्य रूक जाता है ऐसा नहीं ऐसा हमें लगता है फिर भी किसी मुश्किल प्रसंग में अपने मन के समतोल को साध्य करने के लिए आत्मिक शक्ति की जरूरत महसूस होती है। उस वक्त हम क्या करेंगे? स्वयं को बुद्धिवादी कहलवाना यह अपूर्णता का लक्षण है। क्योंकि देह के एक महत्वपूर्ण माध्यम की विकसित अवस्था का अनुभव ना लेकर हम हमारा मत व्यक्त करते हैं। किसी निरोगी व्यक्ति को डॉक्टर और अस्पताल की क्या आवश्यकता है कहने जैसा है। जब बुद्धिवादी मनुष्य के आगे जीवन में समस्याओं का सामना करते वक्त हाथ-पांव काँपने लगते हैं तब उसे थक हार कर ईश्वरी मार्ग का अवलंब करना पड़ता है। ऐसे वक्त इतने साल तक जिस बुद्धिवाद का पोषण किया उसमें कही ना कहीं कमी रह गई ऐसी निराशा मन में रहती है और हम किसी के सामने झुकेंगे नहीं यह अहभाव टिक नहीं पाया इसका दुख भी होता है। जिसके कारण वह विचित्र परिस्थिति में फंस जाता है। वास्तविकता में यदि बुद्धि सूक्ष्म मन के साथ मिलती है तो ऐसे व्यक्ति जीवन में अलौकिक कार्य करते हैं। और जग के कल्याण के लिए इस प्रकार की निर्मिती करते हैं कि उनका नाम अजरामर हो जाता है।

आज जग में हमें जो नाम, प्रसिद्धि प्राप्त हुई। हमें जिन सुखों की प्राप्ति हुई, “ये सब मैंने कमाया है।” ऐसा हमारे कहने पर भी उस जीवन को बनाने में कई लोगों के श्रम (कष्ट), कोशिशों और इच्छा कारणीभूत हुई होती है इसीलिए शास्त्र में मातृदेवोभवः, पितृदेवोभवः, आर्चायदेवोभवः और अतिथि देवोभवः कहा गया है। इन सब में महत्वपूर्ण ऋण माता-पिता का है क्योंकि उन्होंने हमें जन्म देकर संगोपन करने का कार्य किया है। संगोपन का अर्थ केवल आहार व शिक्षण न होकर अपने मन की धारणा को आकार देना और मनको ईश्वरी शक्ति से जोड़ना है जोकि उन्होंने किया है। आज हमें जिस जीवन का लाभ हुआ है यह माता-पिता के कारण है और उनके प्रित्यर्थ जब तक हमारे हाथों यथा-योग्य कर्तव्य पूर्ण नहीं किए जाते तब तक कितने भी सुख प्राप्त करने पर भी हमें समाधान अवस्था का अनुभव नहीं मिल पाता। हमारे बचपन में उन्होंने हमें संभाला उसी प्रकार से उनकी वृद्धावस्था में उनको संभालना हमारा कर्तव्य है। क्योंकि वृद्धत्व बाल्यावस्था के समान ही होता है।

अब आचार्यदेवोभवः यानी हमें बनाने वाले गुरुजन। जिस गुरु ने हमें पहला “श्री” सिखाया वहाँ से हमारे अभ्यास क्रम में हमें जिन गुरुओं के मार्गदर्शन का लाभ हमें प्राप्त हुआ, उन सबका ऋण हम पर होता है। आज महीने के अंत में तनखा लेकर हस्ताक्षर करते वक्त उन अक्षरों की जिन्होंने पहचान करवा दी वहाँ से लेकर तनखा प्राप्त करने तक की जिस पदवी को हमने प्राप्त किया उन गुरुजनों का स्मरण क्या कभी हम करते हैं हमारे अभ्यास क्रम में जो किताबें होती हैं, उन्हें केवल घर पर लाकर हम विद्या नहीं प्राप्त कर सकते। उस विद्या को सिखाने के माध्यम की आवश्यकता होती है और इस प्रकार से प्राप्त विद्या द्वारा जो मासिक वेतन हमें प्राप्त होता है। क्या उसमें से कुछ हम परोपकार के रूप में विनियोग करते हैं? क्योंकि शिक्षक जो विद्या देते हैं? उसके पीछे परोपकार की भावना होती है तो क्या आप अपनी तनखा में से कुछ अंश परोपकारार्थ देते हो?

जिस प्रकार से जीवन जीने का साधन प्राप्त करवा देने वाले ये गुरुजन हैं उसी प्रकार से मानवीय जीवन मीमांसा का ज्ञान करवा देने वाले मनुष्य के सूक्ष्म मनका विकास करवा देने वाले, आत्मिक शक्ति की धारणा करवा देने वाले, आध्यात्मिक मार्गदर्शन करवा देने वाले इनकी भी हमें जरूरत होती है। पर इन गुरुओं को मानना या उनका मार्गदर्शन लेना इसमें पिछड़ापन कमी महसूस हुआ। जब स्कूल, कॉलेज जाने में हमें कमी महसूस नहीं हुई तो आध्यात्मिक गुरुओं को मानने में हमें झिझक क्यों महसूस हो? परिस्थिति वश मजबूर होकर इस मार्ग से जाने के बजाए, जीवन का आवश्यक अंग इस रूप में उसका विचार करना आवश्यक है। जिन्हें इस मार्ग का अवलंब करें ऐसी इच्छा होती है वे आध्यात्मिक क्षेत्र की किताबों को पढ़कर उसका लाभ लेना चाहते हैं। जिससे बौद्धिक स्तर पर ज्ञान प्राप्ति होगी परंतु व्यावहारिक स्तर पर उसका उपयोग नहीं हो पाता। क्योंकि आध्यात्मिक बुद्धि से धारण करने का शास्त्र न होकर देह द्वारा अनुभव करने का शास्त्र है।

इस देहिक माध्यम की आँखों से ना दिखने वाले ऐसे जो घटक है उन्हें "सूक्ष्म देह" कहा गया है। उनका सर्वांगीण विकास गुरु सानिध्य में होता है। इसका मतलब आध्यात्मिक गुरु की प्राप्ति और मार्गदर्शन प्राप्त होने के बाद ही हम परिपूर्ण विकसित अवस्था में जीवन व्यतीत करते हैं और आनंद प्राप्त करते हैं। आज प्रपंच और परमार्थ के अलग-अलग विषय हैं। ऐसा माना जाता है उसके कारण बहुसंख्य लोग इस परमार्थ से दूर हो जाते हैं। वास्तविकता में हम जितना प्रपंच को जोड़ने के प्रति उत्सुक होते हैं। उतना ही परमार्थ जोड़ने में तत्पर होना चाहिए। क्योंकि प्रपंच का समाधान प्राप्त करने के लिए परमार्थ है। देवदेवताओं के बारे में कहानियाँ, पोथी, पुराण यानी परमार्थ न होकर देह के सारे इन्द्रियों, अवयवों द्वारा उस अवस्था का अनुभव लेना चाहिए। इसके लिए नियमित तौर से दिनभर में कुछ वक्त अलग निकालना चाहिए। सूक्ष्म मन विकसित होने पर हम नित्य आनंद का अनुभव ले सकते हैं। अपने अंदर सहनशक्ति और सहिष्णुता बढ़ती है। दूसरों का आदर करने की आदत होती है। दूसरों के विचारों को समझने की वृत्ति बढ़ती है। अपने अंदर हम दूसरों से अलग या उच्च है ऐसी भावना न रखकर नम्रता यह गुण बढ़ता है। दूसरों में कौन से गुण है उन्हें खोज निकालने की वृत्ति बढ़ती है। और दूसरों से हमें कुछ सीखाने जैसा है ऐसी भावना होने लगती है इसी को अतिथि देवोभवः कहा है।

अपना जीवन परिपूर्ण रूप से विकसित कर देह के सारे माध्यमों का पूर्णतः लाभ लेने का आसान मार्गशास्त्र ने और गुरुमार्ग के अधिकारी व्यक्तियों ने बताया है फिर भी मनुष्य आज उसकी ओर आवश्यक उतना ध्यान नहीं देता। परिवार का देवतार्जन पत्नी ही करें ऐसी प्रवृत्ति देखने को मिलती है। वास्तविकता में विवाह में जो कन्यादान विधि होती है उसका प्रत्यक्ष मतलब 'कर्मदान' है। इसका अर्थ पत्नी का कर्म पति के कर्मों में समाया जाता है क्योंकि वैवाहिक जीवन में प्रजोत्पादन के वक्त उस स्त्री में जन्म लेने वाले जीव को अपना कर्मवलय धारण करने के लिए जगह होना आवश्यक होता है। जिससे निकोप संतती का जन्म होता है। और पति में धारण हुए ऐसे दोगुने कर्मवलय के कारण पति ने अधिक देवतार्जन और मन से करना चाहिए ऐसा शास्त्र है।

मन इस अवस्था को दर्शाना संभव नहीं है। उसका अनुभव करना होता है किसी स्त्री को देखने के बाद वह स्त्री है इसकी समझ पहले से ही मन में होती है। परन्तु वह स्त्री अपनी माता होगी तो 'माँ' का एहसास सूक्ष्म मन में होता है। जब हम निसर्ग सानिध्य में जाते हैं। तब किसी पानी के झरने को देखते वक्त, पहाड़ों पर से सामने का विहंगम दृश्य देखते वक्त या समुंदर के किनारे जाने पर निसर्ग के विविध रूप हमें मोहित करते हैं। परन्तु उससे भी आगे जाकर शरीर में एक अलग ही आनंद की भावना की जो अनुभूति प्राप्त होती है। प्रसन्नता महसूस होती है। शरीर पर रोमांच उत्पन्न होते हैं। यही "सूक्ष्म मनका" आविष्कार है।

सूक्ष्म मन का समावेश साधना में होना चाहिए। केवल रूढ़ी या अनुकरण सोचकर यदि क्रिया करें तो वह यांत्रिक होती है। किसी रोबोट के समान कार्य होता है। उसके कारण देवतार्जन करके भी हम निश्चित रूप से क्या कर रहे हैं यह समझ में नहीं आता या क्या प्राप्त कर रहे हैं यह भी समझ में नहीं आता। मनुष्य एक दिभ्रमित अवस्था में जीवन जीता रहता है।

मनुष्य का जीवन आज तेजी से गतिमान हो रहा है। देवतार्जन के लिए आत्मिक शांति प्राप्त करने के लिए मनुष्य के पास पहले के जमाने जितना वक्त नहीं है। और ऐसा होने पर भी मनुष्य जीवन का मूलभूत धर्म नहीं बदलता। देहिक क्रिया, श्वासोश्वास रक्ताभिसरण, पचन ये क्रियाएँ वैसे ही होती रहती हैं। नाड़ी की गति 72 होना रक्तदान 140/80 होना फास्टिंग शुगर 80 से 120 होना यह उत्तम आरोग्य का लक्षण है। हम जो आहार लेते हैं उनकी पाक क्रिया में सुधार होते गए और पहले के जमाने से अब कम समय लगता है। माइक्रो ओव्हन में अन्न जल्दी पकता है। देहिक शक्ति प्राप्त करने की इस साधना (अन्न पकाना) में बदलाव आते गए। उसी प्रकार से आत्मिक शक्ति प्राप्त करने के साधनों में भी होना चाहिए। अब देवतार्जन एवं साधना इनके लिए दिन भर में अधिक वक्त निकालना संभव नहीं है। अब मनुष्य को 15/20 मिनट की साधना में चौबीस घंटे प्रसन्नता रहेगी ऐसी सिद्धता मिलनी चाहिए और उसे देने वाले गुरु भी होने चाहिए। यह आज की जरूरत है।

हमारे गुरु वं. दादाजी भागवत इन्होंने इन सबके बारे में अभ्यास किया और करीब-करीब चालीस साल के परिश्रम द्वारा उन्होंने जगत के सामने ऊँकार साधना के स्वरूप में ऐसा मार्ग रखा है। इस प्रकार से की विश्वशक्ति को इस साधना से उन्होंने एकरूप करवा दिया है। यह साधना ऐसी है कि जग के सारे धर्म के, पंथ के, जाति के, लोग सारा भेदभाव छोड़कर मानव के रूप में इस साधना का अंगिकार करेंगे और स्वयं में मानवता का धर्म साकार करेंगे।

जिन्हें धर्म संस्थापक करके संबोधित किया जाता है। उन्होंने जग को मानवता धर्म का ही संदेश दिया परन्तु उनके अनुयाईयों ने धर्म या पंथ के रूप में उसमें विभिन्नता लाई और पर्याय से समाज एकजुट रहने के बजाए प्रत्येक घटक एक दूसरे से दूर जा रहें हैं। ऐसा दिखाई देता है। इसलिए आज सभी को एकत्रित करेगा ऐसे अनुभव सिद्ध तत्वज्ञान की आवश्यकता है।

आज जो धर्म प्रचलित है वे शरीर के लिए है। आत्मा के लिए नहीं। इसीलिए आत्मिक स्तर पर सभी का एक होना संभव है। आत्मिक विकास का अंत नहीं है और यदि वह होने लगे तो प्रथमतः हम स्वयं अपना, बाद में अपना परिवार और उसके बाद में समाज इन्हें संभालने की कार्यक्षमता अपने अंदर निर्माण होती है पर इसके लिए दुनिया में हम ही होशियार हैं ऐसे विचार मन में उत्पन्न होने से पहले हमारा जीवन बनाने वाले, संभालने वाले, विकसित करने वाले जो घटक है उन्हें मानने की आदत हमने बना लेनी चाहिए। फिर अपना जीवन कैसे विकसित होता जाता है इसका अनुभव स्वयं के ही देखने योग्य होता है। फिर ईश्वर है या नहीं यह सवाल ही बाकी नहीं रहता। उसके अस्तित्व को पुस्तकों द्वारा, चर्चा, वाद-विवाद, चमत्कार या दूसरों को प्राप्त हुए अनुभवों द्वारा समझने की जरूरत महसूस नहीं होती। जबकि वह हमारे स्वयं के सानिध्य में है इसकी अनुभूति हर एक को मिल सकती है। अपने जीवन के समाधान का अनुभव निरंतर स्वरूप में लेने का वह मार्ग है।

आईये आज हम सब मिलकर प.पू. साईनाथ महाराज की अठानवी (98) पुण्य तिथि पर ऐसी प्रार्थना करें कि आज हम सबको आपने जो स्वयंभू शक्ति केन्द्र "साई निकेतन" सौंपा है उसके द्वारा आपका स्थापित किया हुआ "मानव कल्याण" कार्य हम सब प.पू. दादा महाराज के गुरुबंधु पूरा कर सकें ऐसी आपके चरण कमलों में प्रार्थना। यही प्रार्थना नवनाथ आदि विभूति तथा अन्य सभी विभूतियों के चरणों में कर रहा हूँ।

॥ शुभं भवतु ॥

एक तुच्छ जन्म जन्म का सेवक,  
श्री साईकल्प अध्यात्म संस्था

### विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई-मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

***Sri Saikalp Adhyatm Sanstha***

***"Sai Niketan"***

***5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561***

***E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com***

***Please send your yearly subscriptions as early as possible***